मासिक RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्यः 25 /- रूपये

वर्ष-17 अंक - 7 (मई - 2021)
Vol - XVII Issue No - VII
(May - 2021)

Indexed In International Impact Factor Services (IIFS) Database
Indexed In the International Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 5.125

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

अनुक्रम

» प्रथम आज़ाद हिंद फौज के निर्माण में जापान की भूमिका
डॉ. रविंद्र लोणारे 06

» निमाड़ का रॉबिन हुड - टंट्या भील
डॉ. अनुराधा शर्मा 12

» ग्रामीण भारत में उच्च समावेशी विकास को बढ़ावा
डॉ. सुधीर कुमार विश्वकर्मा 15

» छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतों में राजनीतिक विडम्बनाएँ
शैलेन्द्र कुमार साहू, निर्देशक- डॉ. स्वामीराम बंजारे 20

» नारी के प्रति घटित होने वाले अपराध एवं उनसे जुड़े कारण : एक अध्ययन
(जिला- फिरोजाबाद के विशेष संदर्भ में)
कु. निशा यादव 23

» समकालीन हिन्दी दलित नाटक : एक दृष्टि
डॉ. रश्मि रविन्द्रन 26

» राग प्रस्तुतीकरण में वादी - संवादी स्वरों की भूमिका - हिन्दुस्तानी संगीत के संदर्भ में
वंशिका रस्तोगी 30

» दिल्ली सल्तनतकालीन युद्धनीति का स्वरूप
सुनील राम 37

» फ्लोराइड युक्त पेयजल का किशोरियों के शारीरिक विकास एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव
चौहान सुश्री किरण, शर्मा डॉ. मंजू 40

» अज्ञेय की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना "जयदोल" कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में
डॉ. सन्ध्या. एस 45

» महाकवि कालिदास की कृतियों में वनस्पतियों में मानवीकरण संवेदना
दीपिका खत्री 48

» डिजिटल युग में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन
उदित्य सिंह सेंगर, डॉ. अनुराधा शर्मा 50

» डॉ. विवेकी राय जी की कहानियों में संवेदना
नीलम मौर्या, मोहन लाल मौर्य 56

» राम वन - गमन - दक्षिण कोशल के विशेष संदर्भ
डॉ. मधुकराचार्य त्रिपाठी 60

» भारतेन्दु के अनुवाद संबंधी विचार एवं प्रक्रिया विश्लेषण
डॉ. अब्दुल लतीफ 63

» नागार्जुन के काव्य में देश की धरती की धड़कन
विनय कुमार मिश्र 66

» हिन्दी एकांकियों में वर्ग संघर्ष : आर्थिक असमानता का परिणाम
डॉ. बी. एल. गुंडूर 69

» "ब्रम्हराक्षस" कविता का संघर्ष और आत्मसंघर्ष
डॉ. रमेश यादव 72

» भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति
प्रा. डॉ. आनन्द र. बक्षी 74

» कुबेरनाथ राय के आरंभिक निबंध
मंजू एस नायर 76

» तेजेन्द्र शर्मा के कहानी संग्रह 'सपने मरते नहीं' का सामाजिक अध्ययन
परविन्दर सिंह 78

» बुन्देली लोक संस्कृति : वेशभूषा, रहन-सहन एवं खान-पान
डॉ. सुदामा सखवार 81

» आदिवासी स्त्री दशा और दिशा के आईने में आत्मा कबूतरी
डॉ. मंजू देवी 83

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 5.125
Vol - XVII, Issue - VII, May - 2021
"AKSHARWARTA" Monthly International Referred Journal

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति

प्रा. डॉ. आनन्द र. बक्षी

सहायक प्राध्यापक,, कला,विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चिखलदरा, जिला-अमरावती, महाराष्ट्र

वैदिक शिक्षा भारत की सबसे प्राचीन शिक्षा व्यवस्था है। जिस समय विश्व में कहि दुसरी और शिक्षा नाम की कोई चीज नही थी उस समय भारतीय समाज में वैदिक शिक्षा का प्रचलन था। भारत की यह प्राचीन शिक्षा आध्यात्म पर आधारित थी। जो की व्यक्ति के लिए न होकर धर्म के लिए थी। प्राचीन भारतीय वैदिक शिक्षा पद्धती विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी। यही कारण था कि भारत प्राचीन काल में विश्व गुरू कहलाता था। डॉ. अल्टेकर के अनुसार-''वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिए शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि, शिक्षा प्रकाश का स्त्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यो में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है।''[1]

भारत की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली ने विशाल वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जिनसे इस देश का मस्तक आज भी यश और गौरव से उन्नत है '' ऐसा कोई भी देश नही है जहॉ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में आरंभ हुआ हो, या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया हो। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिक तक, शिक्षकों और विद्वानों का एक निर्विघ्न क्रम रहा है।''[2]

वैदिक शिक्षा गुरूकुल में हुआ करती थी, शिष्य अपने गुरू के सानिध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त किया करता था। वैदिक काल में शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व नही था, परिणामत: उस पर राज्य का कोई नियंत्रण भी नही था। उस पर शिक्षा पूर्णरूप से गुरूओं के व्यक्तिगत नियंत्रण में थी। छात्र अपने गुरू के कुल अथवा किसी आश्रम में रहते थे। वही रहकर वे ज्ञानार्जन करते थे। वास्तव में गुरूकुल नैसर्गिक सानिद्य में, जनपद कोलाहल से दूर, प्रकृति के सुरम्य कक्ष में स्थित होते थे। परंतु वे किसी गाँव या नगर के समीप अवश्य होते थे, जिसमें निवास करने वाले छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। वेदो में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है, जिनसे ज्ञात होता है कि, सुदूर अतीत में भी भारत में संगठित रूप से गुरूओं द्वारा शिक्षा दी जाती थी। ''छीन्दोग्य उपनिषद'' से ज्ञात होता है कि बालक गुरू-ग्रह में रहकर विद्याध्ययन करते थे। वैदिक साहित्य में इस बात का उल्लेख मिलता है कि वैदिक युग में संघ, परिषद, चरण, मठ, गुरूकुल, तथा आश्रम स्थापित हो गए थे, जहाँ गुरू वैयक्तिक रूप से स्वयंमेव शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते थे। ग्रामों में भी प्राथमिक पाठशालाएँ थी।''[3]

भारत के प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक जीवन की शिक्षा थी। वैदिक शिक्षा बाल केंद्रीत नही थी। वर्तमान में शिक्षा बाल केंद्रीत है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को केंद्र में रखकर तैयार किया जाता है वह वैदिक काल में नही था। शिक्षा व्यक्ति का सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए अनिवार्य तत्व है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने भली-भांति समझा था। इसी कारण भारतीय सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही भारत में शिक्षा की उचित व्यवस्था की गई थी। गुरू शिक्षार्थी को अपना सानिध्य देते थे और शिक्षा प्रदान किया करते थे। वैदिक शिक्षा भारत की अपनी मौलिक शिक्षा व्यवस्था थी। वैदिक काल में शिष्य गुरूकुल में रहकर गुरू से शिक्षा प्राप्त किया करता था। यह शिक्षा जीविकोपार्जन के लिए नही अपितु समाज के लिए हुआ करती थी। ब्राहम्ण वेद-वेदांत की शिक्षा ग्रहण किया करते थे, वहीं क्षत्रिय-वेद, राजनीति और अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा ग्रहण किया करते थे। गुरूकुल में शिक्षार्थीओं का चरित्र निर्माण किया जाता था, जो उसे समाज में एक अलग महत्व दिलाता था। गुरूकुल में मिली शिक्षा के द्वारा ही शिक्षार्थी अपने कठिन समय में भी धैर्यपूर्वक कार्य करके उन चुनौतियों का सामना किया करता था। इससे स्पष्ट है कि उस काल में शिक्षा सर्व प्रमुख उददेश्य ज्ञान का विकास था। समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन और राष्ट्रीय संस्कृति के सरंक्षण एवं विकास पर भी उस काल में विशेष बल दिया जाता था। मोक्ष की प्राप्ति तो उस काल में मनुष्य जीवन का अंतिम उददेश्य माना जाता था और इसकी प्राप्ति के लिए शिक्षा द्वारा उसका आध्यात्मिक विकास किया जाता था।

वैदिक कालीन शिक्षा का सबसे महत्व पुर्ण उद्देश्य था ज्ञान का विकास करना। इस काल में ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता था। '' ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्रं''

तब यह माना जाता था कि ये दो नेत्र हमें केवल दृश्य जगत का ज्ञान भर कराते हैं परंतु यह तीसरा नेत्र हमें दृश्य और सूक्ष्म दोनों जगत का ज्ञान कराता है। यह हमें सत्य-असत्य का भेद स्पष्ट कराता है, अच्छे और बुरे कर्मो का भेद स्पष्ट करता है साथ ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट करता है। एक विद्वान का कथन है कि-''ज्ञान मुनष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने की क्षमता प्रदान करता है एवं उसे उचित व्यवहार करने में प्रवृत्त करता है।''[4]

प्राचिनकाल की वैदिक शिक्षा के उद्देश व्यापक स्वरूप का था। वैदिक शिक्षा के द्वारा मनुष्यों का शारीरिक एवं मानसिक विकास किया जाता था, इस शिक्षा से मनुष्यों को उनके सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों का बोध कराया जाता था। उनमें नैतिकता एवं चारित्रिक विकास किया जाता था। प्राचिन काल की शिक्षा में सर्वाधिक बल ज्ञान के विकास, चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक विकास पर दिया जाता था।

वैदिक काल में गुरूओं ने शिक्षण की अनेक उत्तम विधियों, अनुकरण, व्याख्यान, प्रश्नोत्तर, विचार-विमर्श, श्रवण-मनन-निदिध्यासन, तर्क, प्रयोग एवं अभ्यास, नाटक और कहानी का विकास किया था। वैदिक

काल में गुरूकुलों के नियम बड़े कठोर होते थे, और गुरू एवं शिष्य, दोनो ही इनका पालन करते थे। गुरू-शिष्यों के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध थे। उपर से प्रेम बरसता था और नीचे से श्रद्धा उमड़ती थी। गुरूओं के आदर्श आहार-विहार और आचार-विचार का शिष्यों पर सिधा प्रभाव पडता था और वे भी उचित आहार-विहार और उचित आचार-विचार का पालन करते थे।''वह गुरू का स्थान-राजा, माता, पिता, एवं देवता से निम्न नहीं समझते थे और उनका हदय से सम्मान करते थे। वे प्रात:काल गुरू से पूर्व उठकर उनका अभिवादन करते थे और उनके नीचे आसन पर बैठते थे। वे आचार्य की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य करते थे।''[5] वेदो में आचाय्र को छात्र का 'मानस पिता' कहा है। वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरू शिष्यों की पूरी देख - भाल करते थे और उनके सर्वागीण विकास के लिए कठोर परिश्रम करते थे। सच तो यह है किं जब तक शिष्यों की गुरूओं में श्रृद्धा नही होती, वे उन्हे कुछ भी नही सीख पाते और जब तक गुरू शिष्यों के प्रति समर्पित नही होते, वे शिष्यों को कुछ भी सिखा नही सकते । गुरू अपने शिष्यों के चरित्र का सदैव ध्यान रखता था। गुरू का कर्तव्य था अपने विद्यार्थियों का शारिरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास करना।

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था। इस काल में नारी-शिक्षा अपने चरम उत्कर्ष पर थी। ''प्राचीनकालीन शिक्षा में अपाला, घोषा, लोपमुद्रा, विश्ववारा, गार्गी, मैत्रेयी, जैसी विदुषी नारियाँ, अनेक गूढतम विषयों पर शास्त्रार्थ करके अपने पाण्डित्य का परिचय देती थी। वे वाद-विवाद, तर्क-वितर्क में, यज्ञ तथा कर्मकांडो में अपने पतियों के साथ सक्रिय रूप से भाग लेती थी।''[6] कुछ वेदमंत्रो से स्पष्ट होता है कि कुमारियों के लिए शिक्षा अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण मानी जाती थी। ब्रह्मचर्य - व्रत से सम्पन्न शिक्षित कन्या को ही गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त था। बदलते समय के साथ समाज में स्त्रियों का महत्व तथा उसके फलस्वरूप उनका शिक्षा-अधिकार कम होता चला गया। परिवर्तित शिक्षा ने नारी के जीवन में, अनेक परिवर्तन किए है, स्वतंत्रता प्राप्ति उपरांत उसकी स्थिति में सुधार हुआ है किंतु प्राचीन भारत की प्राचीन शिक्षित समाज में उसकी जो स्थिति, मान व प्रतिष्ठा उसे प्राप्त था वह सम्मान उसे पुन: प्राप्त न हो सका है। निष्कर्ष:- हम यह कह सकते है कि आधुनिक शिक्षा और वैदिक कालीन शिक्षा में आसमान जमीन का फर्क है। जहाँ एक और वैदिक कालीन शिक्षा बालक के जीवन से संबंधित था, वही आधुनिक शिक्षा केवल जीविकोपार्जन के लिए व्यवसायीकरण के लिए है, वैदिक कालीन शिक्षा शिक्षक केंद्रित थे, वही आज की शिक्षा बाल केंद्रित हो गई है, किंतु फिर भी वैदिक कालीन शिक्षा आधुनिक शिक्षा से सर्वोत्तम थी। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली उस समय की संसार की श्रेष्ठतम शिक्षा प्रणाली थी परंतु आज के भारतीय समाज के स्वरूप और उसकी भावी आवश्यकताओं की दृष्टि से उसके कुछ तत्व ग्रहणीय है और कुछ त्याज्य है । हमें वैदिक कालीन शिक्षा के ग्रहणीय तत्वों को ग्रहण कर अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

संदर्भ सूची :-

1. Gyanpradayani, Blogpost.com.
2. भारतीय शिक्षा का इतिहास-राकेश त्रिवेदी, ओमेगा पब्लिकेशन-2006 पृ. स. 01.
3. भारतीय शिक्षा का इतिहास-राकेश त्रिवेदी, ओमेगा पब्लिकेशन-2006 पृ. स.04.
4. भारतीय शिक्षा का इतिहास-राकेश त्रिवेदी, ओमेगा पब्लिकेशन-2006 पृ. स.03
5. भारतीय शिक्षा का इतिहास-राकेश त्रिवेदी, ओमेगा पब्लिकेशन-2006 पृ. स. 07.
6. भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति और नारी-निरूपा उपाध्याय, अक्षरवार्ता, जाने 2019 पृ. स. 12.